CONTENTS

विषय-सूची

आमुख

प्रस्तावना

अध्याय एक

विदुर द्वारा पूछे गये प्रश्न

विदुर के मैत्रेय ऋषि से प्रश्न

धृतराष्ट्र द्वारा पाण्डवों के घर में आग लगाया जाना

युधिष्ठिर को जुए में कपट से हराया जाना

विदुर द्वारा राजनीतिक सुझाव

विदुर को दुर्योधन द्वारा अपमानित किया जाना

तीर्थयात्री विदुर

उग्र आवेग से यदुओं की मृत्यु

विदुर की उद्धव से भेंट

उद्धव से विदुर के प्रश्न

कृष्ण के पदचिह्नों पर अक्रूर का गिरना

अर्जुन द्वारा शिव को तुष्ट किया जाना

धृतराष्ट्र के लिए विदुर द्वारा शोक

कृष्ण कुरुओं का वध करने से क्यों कतराते रहे ?

यदुओं के लिए कृष्ण का प्राकट्य

अध्याय दो

भगवान् कृष्ण का स्मरण

उद्धव का बाल्यकाल

उद्धव में भाव-परिवर्तन

विश्व का सूर्य अस्त हो गया है

यदुओं द्वारा परमेश्वर के रूप में कृष्ण को न जान पाना

कृष्ण का शरीर समस्त आभूषणों का भूषण

कृष्ण के चले जाने पर गोपियों की परिवेदना

कृष्ण के आचरण से विदुर दुखी

शिशुपाल का कृष्ण के शरीर में विलय होना

पूतना को कृष्ण की माता का पद प्रदत्त

कृष्ण का नन्द महाराज के घर भेजा जाना

बालक कृष्ण का सिंह-शावक की तरह प्रकट होना

कृष्ण द्वारा बड़े बड़े मायावियों का वध

कृष्ण द्वारा रासनृत्य का आस्वादन

अध्याय तीन

वृन्दावन से बाहर भगवान् की लीलाएँ

कृष्ण तथा बलराम द्वारा कंस का वध

कृष्ण द्वारा रुक्मिणी हरण

अपहृत राजकुमारियों से कृष्ण का विवाह

कृष्ण द्वारा अपने भक्तों की शक्ति का प्रदर्शन

पृथ्वी के अथाह भार का हल्का होना

यदुओं का आपस में झगड़ना

युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न

कृष्ण द्वारा माधुर्य प्रेम का भोग

यदुओं का तीर्थस्थानों में जाना

अध्याय चार

विदुर का मैत्रेय के पास जाना

कृष्ण की इच्छा से यदुओं का विनाश

अरुणोदय की भाँति कृष्ण के लाल लाल नेत्र

उद्धव को कृष्ण की चरम कृपा प्राप्त

अजन्मा होकर कृष्ण का जन्म लेना

शुद्ध भक्त भौतिक कष्टों से रहित

अब भी हिमालय में नर-नारायण

भक्तगण समाज के सेवक

कृष्ण के प्रयाण से विदुर दुखी

कृष्ण का लौकिक जगत की दृष्टि से ओझल जाना

उद्धव का बदरिकाश्रम पहुँचना

ईर्ष्यालु पशु कृष्ण को नहीं जान सकते

अध्याय पाँच

मैत्रेय से विदुर की वार्ता

अध्यात्म में तुष्ट विदुर

महान् परोपकारी आत्माएँ

स्वतंत्र निष्काम भगवान्

सभ्य मनुष्य को द्विज होना चाहिए

कृष्ण कथामृत

कृष्णकथा एकमात्र ओषधि

भौतिकतावादियों पर दयनीय दयालु

सर्वसमावेशी सेवा

विदुर पूर्वजन्म में नियंत्रक यमराज

सुप्त शक्ति पर भगवान् की दया

भावी जीवों के आगार

मिथ्या अहंकार का मुख्य कार्य ईशविहीनता

भौतिक तत्त्वों के अधिष्ठाता देव

कृष्ण के चरणकमलों की छाया

ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर

समस्त आनन्दों का साम्राज्य

भोजन के रूप में पाप के टुकड़े

विराट सृष्टि की दशाओं में फँसना

अध्याय छह

विश्वरूप की सृष्टि

तेईस तत्त्वों के भीतर परमेश्वर का प्रवेश

विराट विश्वरूप का प्राकट्य

सम्पूर्ण सृष्टि विष्णु पर टिकी है

देवताओं द्वारा ब्रह्माण्ड का निर्माण

विश्वरूप के मुख का प्रकट होना

उनकी आँखों का प्रकट होना

उनके कानों का प्रकट होना

उनकी त्वचा का प्रकट होना

उनके हाथ पाँव का प्रकट होना

उनके हृदय का प्रकट होना

उनके अहंकार का प्राकट्य

विश्वरूप से लोकों का प्राकट्य

वैदिक ज्ञान का प्राकट्य

विष्णु के पैरों से सेवा का प्रकट होना

सामाजिक विभागों की सृष्टि

शुद्ध वाणी द्वारा कृष्ण का महिमागान

कृष्ण की मोहक शक्ति

कृष्ण को नमस्कार करना बुद्धिमत्ता का सूचक

अध्याय सात

विदुर द्वारा अन्य प्रश्न

समस्त शक्तियों के स्वामी कृष्ण

शुद्ध आत्मा शुद्ध चेतना है

जिज्ञासु विदुर द्वारा क्षुभित मैत्रेय

दुष्ट जीवों का मोह

अनन्त दयनीय अवस्थाओं का अन्त

अधम मूर्ख सुख से जीते हैं

विदुर के प्रश्न

श्रद्धाविहीन नास्तिकों के विरोधाभास

गुरु असहायों पर दयालु

भगवान् के निष्कलुष भक्त

मैत्रेय ऋषि अमर

अध्याय आठ

गर्भोदकशायी विष्णु से ब्रह्मा का प्राकट्य

भागवत ग्रन्थ तथा भागवत भक्त

महान् मुनिगणों की गंगा में से होकर यात्रा

क्षमा की ब्राह्मण शक्ति

सृष्टि का सूक्ष्म विषय

कमल से ब्रह्मा का उत्पन्न होना

विष्णु के हाथ में नित्य चक्र

ब्रह्मा में आवश्यक ज्ञान का उपजना

भगवान् द्वारा अपने चरणकमल दिखाया जाना

आत्म-स्थित वृक्ष, विष्णु

ब्रह्मा सृजन के प्रति उन्मुख

अध्याय नौ

सृजन-शक्ति के लिए ब्रह्मा द्वारा स्तुति

कमल के फूल से ब्रह्मा का जन्म

भगवान् के साकार रुप की उपेक्षा करने वाले लोग

बद्धात्माओं की चिन्ताएँ

भक्तों का कानों से देखना

धर्म के कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाते

विराट विश्व रूपी वृक्ष

भगवान् से सुरक्षा के लिए ब्रह्मा द्वारा स्तुति

भगवान् भक्त को भीतर से उपदेश देते हैं

दिव्य दृष्टि मनुष्य के मोह को दूर करती है

ब्रह्मा की स्तुतियों से भगवान् प्रसन्न

सर्वप्रिय वस्तु ईश्वर ही है

अध्याय दस

सृष्टि के विभाग

ब्रह्मा की तपस्या

चौदह लोकों का सृजन

अपरिवर्तनीय तथा अन्तहीन नित्यकाल

सृष्टि के नौ प्रकार

मनुष्यों की उत्पत्ति

देवताओं की उत्पत्ति

अध्याय ग्यारह

परमाणु से काल की गणना

परमाणु अनन्तिम कण है

स्थूल समय का विभाजन

मनुष्य की आयु की अवधि

सूर्य सारे जीवों को जीवन-शक्ति प्रदान करता है

चार युगों की अवधि

मनुओं की आयु की अवधि

ब्रह्मा की रात

भौतिक जगत का अर्धव्यास

अध्याय बारह

कुमारों तथा अन्यों की सृष्टि

ज्ञानाभावी कार्यों की सृष्टि

चार कुमारों की सृष्टि

रुद्र की सृष्टि

रुद्र के पुत्र-पौत्र

ब्रह्मा के विचार-विमर्श से नारद का जन्म

अपनी पुत्री के प्रति ब्रह्मा आकृष्ट

ब्रह्मा द्वारा अपना शरीर-त्याग

चार वेदों का प्राकट्य

ब्रह्मा द्वारा वर्णाश्रम धर्म की स्थापना

ब्रह्मा परम सत्य के पूर्णरूप

स्वायम्भुव मनु की सृष्टि

अध्याय तेरह

भगवान् वराह का प्राकट्य

शुद्ध भक्तों के मुखों से श्रवण करना

ब्रह्मा का मनु पर प्रसन्न होना

भक्ति निजी स्वार्थ के रुप में

ब्रह्मा के नथुने से लघु वराह का निकलना

भगवान् वराह की गर्जना

भगवान् वराह द्वारा पृथ्वी का उठाया जाना

मुनियों द्वारा भगवान् वराह की स्तुति

भगवान् केवल यज्ञ के बंधन में

पृथ्वी भगवान् की पत्नी के रूप में

भगवान् वराह की शुभ कथा का श्रवण

अध्याय चौदह

संध्या समय दिति का गर्भ-धारण

दो भिन्न वराह अवतार

दिति का कामेच्छा से पीड़ित होना

कश्यप द्वारा दक्ष की तेरह पुत्रियों से विवाह

पत्नी की शरण ग्रहण करना

भूत प्रेतों के अधिष्ठाता, शिवजी

निषिद्ध कार्य करने के लिए कश्यप विवश

शिवजी समस्त स्त्रियों के पूजनीय ईश्वर

दिति के निंदित गर्भ से पुत्रों का जन्म

प्रह्लाद दिति के भावी पौत्र

दिति का संतुष्ट होना

अध्याय पन्द्रह

ईश्वर के साम्राज्य का वर्णन

दिति के गर्भ की शक्ति

सारे जीव वैदिक आदेशों द्वारा संचालित

भगवान् तथा उनके भक्तों का वैकुण्ठ में निवास

वैकुण्ठ के निवासी

मानव जीवन की महत्ता

चारों कुमारों का वैकुण्ठ पहुँचना

द्वारपालों द्वारा कुमारों का रोका जाना

वैकुण्ठ में पूर्ण ऐक्य

ब्राह्मण शाप को निराकृत नहीं किया जा सकता

भगवान् समस्त आनन्द के आगार

कुमारों का तुलसीदल की सुगन्धि का सूँघना

कुमारों द्वारा स्तुतियाँ

अध्याय सोलह

मुनियों द्वारा वैकुण्ठ के दो द्वारपालों जय-विजय को शाप

भगवान् सदैव ब्राह्मणों का पक्ष लेते हैं

ब्राह्मणजन भगवान् के प्रसाद से सदैव तुष्ट रहते हैं

भगवान् का सुन्दर तथा उत्प्रेरक व्याख्यान

मुनियों द्वारा स्तुति

लक्ष्मी भगवान् की सेवा में

विनयशीलता से कृष्ण की लीलाएँ देखी जा सकती हैं

मुनियों का दिव्य निवास को छोड़ना

द्वारपालों का वैकुण्ठ से पतन

अध्याय सत्रह

हिरण्याक्ष की विजय

दो असुरों का जन्म

दुकाल के शकुन

हिरण्यकशिपु का वरदान

हिरण्याक्ष द्वारा पौरुष प्रदर्शन

वरुण का वर्धित क्रोध

अध्याय अठारह

भगवान् वराह तथा हिरण्याक्ष के मध्य युद्ध

अपने वराह अवतार में भगवान्

असुर के अपशब्द

भगवान् द्वारा रोष प्रकट किया जाना

हिरण्याक्ष तथा भगवान् का संघर्ष

ब्रह्मा द्वारा नारायण को संबोधन

अध्याय उन्नीस

हिरण्याक्ष का वध

भगवान् द्वारा ब्रह्मा की स्तुति स्वीकार किया जाना

भगवान् द्वारा अपने सुदर्शन चक्र का आवाहन

महाअसुर के पराक्रम का छिन्न-भिन्न होना

असुर द्वारा इन्द्रजाल का प्रदर्शन

दिति द्वारा अपने पति के वचनों का स्मरण

ब्रह्मा का उस स्थान पर पहुँचना

भगवान् हरि का अपने धाम वापस जाना

भक्तों के कार्य-कलाप को सुनना

अध्याय बीस

मैत्रेय-विदुर संवाद

वेदव्यास के शरीर से विदुर का जन्म

भगवान् के उदार कार्यों का सुना जाना

विदुर के प्रश्न

समग्र भौतिक तत्त्वों की उत्पत्ति

कमल-पुरुष से ब्रह्मा का जन्म

ब्रह्मा द्वारा अविद्या-शरीर का परित्याग

ब्रह्मा के नितम्बों से असुरों की उत्पत्ति

असुरों द्वारा सन्ध्या को सुन्दरी समझना

ब्रह्मा द्वारा अपना ज्योत्स्ना स्वरूप का परित्याग

सिद्धों तथा विद्याधरों की उत्पत्ति

ब्रह्मा द्वारा साधुओं को पुत्ररूप में विकसित करना

अध्याय इक्कीस

मनु-कर्दम संवाद

प्रियव्रत तथा उत्तातपाद द्वारा विश्व का शासन चलाया जाना

कर्दममुनि की तपस्या

भगवान् के स्वरूप का वर्णन

कर्दममुनि द्वारा स्तुति

भगवान् के कमल-पुष्प का छत्र

मकड़ी की भाँति भगवान् द्वारा सृष्टि करना

अमृत के तुल्य मृदु की कन्या दिये जाने का वचन

देवहूति के पुत्र रूप में भगवान् का प्राकट्य

गुरुड़ के पंखों से सामवेद की ध्वनि

बिन्दु-सरोवर का वर्णन

मीठे वचनों से कर्दम द्वारा राजा का प्रसन्न किया जाना

अध्याय बाईस

कर्दममुनि तथा देवहूति का परिणय

सम्राट द्वारा कर्दम को सम्बोधन

ब्राह्मण तथा क्षत्रियों द्वारा पारस्परिक सुरक्षा

देवहूति द्वारा उपयुक्त पति की इच्छा

कर्दम का देवहूति के साथ परिणय

देवहूति का आकर्षक सौंदर्य

कर्दम के मुख से देवहूति के मन का आकृष्ट होना

शतरूपा के नागरिकों द्वारा सम्राट का स्वागत

राजर्षि रूप में स्वायम्भुव मनु

अध्याय तेईस

देवहूति का शोक

देवहूति द्वारा कर्दम की घनिष्ठता तथा आदरपूर्वक सेवा

कर्दम द्वारा देवहूति को आशीर्वाद

संभोग से सन्तान प्राप्त करने की देवहूति की आकांक्षा

कर्दम द्वारा हवाई प्रासाद का निर्माण

देवहूति का हृदय में अप्रसन्न होना

देवहूति की सेवा में एक हजार दासियाँ

कर्दम के समक्ष देवहूति का प्रकट होना

कर्दम द्वारा अनेक वर्षों तक सुख-भोग

कर्दम का अपनी कुटिया को वापस जाना

देवहूति द्वारा नौ कन्याओं को जन्म

देवहूति का शोक

साधुजनों की संगति का लाभ

अध्याय चौबीस

कर्दम मुनि का वैराग्य

देवहूति द्वारा ब्रह्माण्ड के स्वामी की पूजा

देवहूति के भीतर परमेश्वर का प्रकट होना

ब्रह्मा द्वारा कर्दम की प्रशंसा

कपिल मुनि द्वारा विवाह में अपनी कन्याओं का दान

कर्दम द्वारा कपिल की स्तुति

भगवान् के असंख्य रूप

कर्दम द्वारा गृहस्थ जीवन से वैराग्य लेने की इच्छा

सांख्य दर्शन की व्याख्या के लिए कपिल का प्रकट होना

कर्दम द्वारा वन के लिए प्रस्थान

भक्ति में स्थित कर्दम

अध्याय पच्चीस

भक्तियोग की महिमा

भगवान् का कपिल मुनि के रूप में जन्म

देवहूति द्वारा पुत्र से प्रश्न पूछना

भगवान् द्वारा अध्यात्मवादियों के मार्ग की व्याख्या

बद्ध जीवन और मोक्ष

भक्ति ही एकमात्र शुभ मार्ग है

साधु के लक्षण

भक्तों के प्रति आसक्ति का महत्त्व

योग की सरलतम विधि

देवहूति द्वारा भक्ति के विषय में पूछा जाना

इन्द्रियाँ—देवताओं की प्रतिनिधि

भक्ति से सूक्ष्म शरीर का विनाश

भक्तगण भगवान् के स्वरूप का दर्शन करना चाहते हैं

भक्तगण सारे प्रदत्त वरदानों का भोग करते हैं

अविचल (अनन्य) भक्ति का वर्णन

भगवान् के भय से वायु का बहना

अध्याय छब्बीस

प्रकृति के मूलभूत सिद्धान्त

ज्ञान ही चरम सिद्धि है

भगवान् सूक्ष्म भौतिक शक्ति को स्वीकार करते हैं

भौतिक चेतना ही बद्ध जीवन का कारण

संचित तत्त्वों का नाम ही प्रधान है

काल पच्चीसवाँ तत्त्व है

भगवान् भौतिक प्रकृति में गर्भाधान करते हैं

शुद्ध चेतना के लक्षण

अनिरूद्ध रूप मन

बुद्धि के लक्षण

शब्द तत्त्व का निरूपण

शून्य (आकाश) तत्त्व के लक्षण

रूप के लक्षण

जल के लक्षण

तत्त्वों का आश्रय स्थल पृथ्वी है

सुप्रसिद्ध विराट व्यक्ति का प्रादुर्भाव

ब्रह्माण्ड का विभाजन

देवताओं द्वारा विराट रूप को जगाना

कारणार्णव से विराट पुरुष का उठना

अध्याय सत्ताईस

प्रकृति का ज्ञान

बद्धजीव का देहान्तरण

योग पद्धति की नियामक विधि

भक्त के गुण

मुक्त जीव द्वारा परमेश्वर का साक्षात्कार

भक्त अहंकार से मुक्त होता है

देवहूति का पहला प्रश्न

ज्ञान में सम्पन्न भक्ति

प्रकृति प्रबुद्ध आत्मा (जीव) को क्षति नहीं पहुँचा सकती

भक्तगण दिव्य धाम जाते हैं

अध्याय अट्ठाईस

भक्ति साधना के लिए कपिल के आदेश

कपिल द्वारा योग-प्रणाली की व्याख्या

मनुष्य को स्पल्प भोजन करना चाहिए

मनुष्य को चंचल मन को रोकना चाहिए

योगीजन मानसिक विक्षोभों से मुक्त

भगवान् के स्वरूप का वर्णन

भगवान् नित्य सुन्दर हैं

भगवान् की लीलाएँ आकर्षक हैं

भगवान् के चरणकमल वज्र की भाँति

भगवान् की नाभि चन्द्रमा के समान

भगवान् की गदा असुरों का वध करने वाली

भगवान् श्रीहरि की कल्याणकारी मुसकान

योगी द्वारा शुद्ध भगवत्प्रेम का विकास

मुक्त आत्मा अपनी शारीरिक आवश्यकताएँ भूल जाता है

परमेश्वर ही द्रष्टा है

आत्मा का विभिन्न शरीरों में प्रकट होना

अध्याय उन्तीस

भगवान् कपिल द्वारा भक्ति की व्याख्या

समस्त दार्शनिक प्रणालियों का चरम अन्त

भगवान् कपिल के वचन

रजोगुणी भक्ति

विशुद्ध भक्ति

भक्त को नियत कर्म करने होते हैं

मन्दिर पूजा—भक्त का कर्तव्य

भक्त अभक्तों की संगति से दूर रहता है

परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है

पृथकतावादी को मन:शान्ति नहीं मिलती

जीवों की विभिन्न श्रेणियाँ

मनुष्यों की विभिन्न श्रेणियाँ

भक्त समस्त जीवों का आदर करता है

भगवान् विष्णु ही काल हैं

समग्र विराट शरीर का विस्तार

अध्याय तीस

भगवान् कपिल द्वारा विपरीत कर्मों का वर्णन

काल की प्रबल शक्ति

बद्धजीवों को नारकीय भोग में प्रसन्नता

आसक्त गृहस्थ पारिवारिक जीवन में रहता है

मूर्ख गृहस्थ मृत्यु की तैयारी में

भौतिकतावादी की अत्यन्त कारुणिक मृत्यु

अपराधी का यमराज के समक्ष लाया जाना

इस लोक में नारकीय यातनाएँ

अध्याय इकतीस

जीवों की गतियों के विषय में भगवान् कपिल के उपदेश

भौतिक शरीर का विकास

गर्भस्थ शिशु की वेदना

गर्भस्थ शिशु की प्रार्थना

परमात्मा की शरण लें

मनुष्य जीवन सर्वोच्च

प्रसव वेदना

बालपन की पीड़ा

बद्धजीव का पुन: नरक जाना

स्त्रियों की संगति से भय

स्त्री माया की प्रतिनिधि

भौतिकतावादी सकाम कर्मों में फँसा रहता है

मृत्यु से भयभीत न होवें

अध्याय बत्तीस

कर्म-बन्धन

भौतिकतावादी चन्द्रमा तक जा सकता है

प्रकाश का मार्ग

ब्रह्माजी द्वारा ब्रह्माण्ड का विनाश

भौतिकतावादी कर्मफल की आसक्ति से कार्य करते हैं

भौतिकतावादी शूकर तुल्य

भक्त समदर्शी होता है

समस्त योगियों के लिए सबसे बड़ी सूझबूझ

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भगवान् से उत्पन्न

भगवान् एक है

कपिल का उपदेश ईर्ष्यालुओं के निमित्त नहीं

अध्याय तैंतीस

कपिल के कार्यकलाप

देवहूति द्वारा प्रार्थना

भगवान् के अनेक अवतार

भगवन्नाम जप करने वाले धन्य हैं

कपिल मुनि द्वारा अपनी माता को उत्तर

देवहूति द्वारा भक्तियोग का शुभारम्भ

कर्दम मुनि के घर का ऐश्वर्य

अपने पुत्र के वियोग से देवहूति सन्तप्त

देवहूति का धुएँ के बीच अग्नि सदृश लगना

समुद्र द्वारा कपिल को रहने का स्थान दिया जाना

परिशिष्ट

लेखक परिचय